IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22077948

ISSN : 3048-6971

21वीं सदी में मार्क्सवादी दर्शन का प्रभाव : क्रांतियां, शासन और विचारधारा

डॉ. सुजाता घोष

शोध सारः–

कार्ल मार्क्स का दर्शन आधुनिक राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक चिंतन की एक प्रभावशाली विचारधारा है। कार्ल मार्क्स ने वर्ग–संघर्ष, ऐतिहासिक भौतिकवाद, श्रम, शोषण, निजी संपत्ति, पूंजीवाद तथा सामाजिक–आर्थिक असमानता के माध्यम से आधुनिक समाज की संरचना को समझने का महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान किया। 20वीं सदी में मार्क्सवादी विचारों ने अनेक क्रांतियों, राजनीतिक व्यवस्थाओं और शासन प्रणालियों को प्रभावित किया, जबकि 21वीं सदी में वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी परिवर्तन और नव–पूंजीवाद के बावजूद इसकी प्रासंगिकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। आर्थिक विषमता, श्रमिक अधिकार, बेरोजगारी, संसाधनों के असमान वितरण, सामाजिक न्याय तथा वंचित वर्गों के आंदोलनों में मार्क्सवादी चिंतन किस प्रकार प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। साथ ही, चीन, क्यूबा तथा अन्य समाजवादी व्यवस्थाओं के अनुभवों और समकालीन लोकतांत्रिक आंदोलनों के संदर्भ में मार्क्सवादी विचारधारा के बदलते स्वरूप का अध्ययन किया गया है। यद्यपि पारंपरिक मार्क्सवाद की अनेक अवधारणाओं में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस होती है, फिर भी वर्गीय असमानता, पूंजी और श्रम के संबंध तथा सामाजिक न्याय को समझने के लिए मार्क्सवादी दर्शन 21वीं सदी में एक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण बना हुआ है।

शब्द बीजः– पूंजीवाद, वर्ग संघर्ष, शोषण, निर्भरता सिद्धांत, वैश्विक असमानता सामाजिक न्याय ,समाजवाद, साम्राज्यवाद,

प्रस्तावनाः–

कार्ल मार्क्स **(1818–1883)** एक प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक, समाजशास्त्री, इतिहासकार, और राजनीतिक सिद्धांतकार थे। उनके विचारों ने वैश्विक समाज, राजनीति, और अर्थशास्त्र में गहरा प्रभाव डाला है। मार्क्स का प्रमुख कार्य, "दास कैपिटल"(Das Kapital), पूंजीवादी उत्पादन पद्धति और उसके परिणामों पर केंद्रित है। कार्ल मार्क्स इतिहास के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक हैं। उनके विचारों ने दुनिया को गहराई से प्रभावित किया है और आज भी बहस और चर्चा का विषय बने हुए हैं। मार्क्सवाद का उदय कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स, 19वीं शताब्दी के जर्मन दार्शनिक, समाजवाद के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से थे। उन्होंने "द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो" (1848) और "दास कैपिटल" (1867) सहित कई महत्वपूर्ण कार्य प्रकाशित किए। मार्क्स ने पूंजीवाद का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि पूंजीपति श्रमिकों का शोषण करते हैं और यह शोषण वर्ग संघर्ष और क्रांति की ओर ले जाएगा। उन्होंने एक वर्गहीन, राज्यविहीन समाज की कल्पना की जिसे "साम्यवाद" कहा जाता है।[1]

मार्क्स ने तर्क दिया कि पूंजीवाद में, उत्पादन उपभोग से अलग होता है। पूंजीपति उत्पादन के साधनों का स्वामित्व रखते हैं और श्रमिकों को कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, श्रमिक उतना उत्पादन नहीं कर पाते जितना वे खरीद सकते हैं, जिससे अभाव पैदा होता है। मार्क्स का मानना था कि वस्तुओं का मूल्य उनमें लगे श्रम की मात्रा से निर्धारित होता है। पूंजीपति श्रमिकों द्वारा उत्पादित मूल्य का अधिकांश हिस्सा अपने लिए ले लेते हैं, जिससे श्रमिकों को कम मजदूरी मिलती है और उन्हें गरीबी में रहने के लिए मजबूर किया जाता है। मार्क्स का मानना था कि पूंजीवाद दो वर्गों में विभाजित है। पूंजीपति और श्रमिक। इन वर्गों के हित विरोधी होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष होता है। मार्क्स का मानना था कि यह संघर्ष अंततः क्रांति और साम्यवाद की स्थापना का कारण बनेगा।[2]

कार्ल मार्क्सः जीवन परिचय

कार्ल हेनरिक मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 को जर्मनी के ट्रियर शहर में हुआ था। उनके पिता हेनरिक मार्क्स, एक वकील थे, और उनकी मां हेनेरिएट प्रेसबर्ग, एक डच मूल की गृहिणी थीं। मार्क्स ने ट्रियर के जिमनाजियम में शिक्षा प्राप्त की, जहाँ उन्होंने दर्शन, इतिहास, और साहित्य का अध्ययन किया। 1835 में, उन्होंने बॉन विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन शुरू किया, लेकिन बाद में बर्लिन विश्वविद्यालय चले गए, जहाँ उन्होंने दर्शन, इतिहास, और राजनीतिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया।[3]

बर्लिन में, मार्क्स हेगेलियन दर्शन से प्रभावित हुए, खासकर भौतिकवाद और वर्ग संघर्ष के विचारों से। उन्होंने 1841 में अपनी डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की, लेकिन राजनीतिक कारणों से उन्हें शैक्षणिक पद नहीं दिया गया। 1843 में, उन्होंने जेनी वॉन वेस्टफालेन से शादी की, जो एक धनी प्रशियाई परिवार की सदस्य थीं। 1844 में, वे पेरिस चले गए, जहाँ उन्होंने अन्य क्रांतिकारी विचारकों के साथ मिलकर काम किया और मार्क्सवादी विचारधारा विकसित की। 1848 में, उन्होंने फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो प्रकाशित किया, जो पूंजीवाद की आलोचना करता है और सर्वहारा वर्ग द्वारा क्रांति और साम्यवाद की

स्थापना का आह्वान करता है। 1849 में, जर्मन क्रांति में उनकी भागीदारी के कारण उन्हें फ्रांस से निर्वासित कर दिया गया। 1850 में, वे लंदन चले गए, जहाँ वे अपनी मृत्यु तक रहे। 14 मार्च 1883 को लंदन में मार्क्स का निधन हो गया।[4]

कार्ल मार्क्स की प्रमुख रचनाएँ :

पुस्तकें:–

- **द कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो (1848):** फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ सह–लेखन, पूंजीवाद की आलोचना करता है और सर्वहारा वर्ग द्वारा क्रांति और साम्यवाद की स्थापना का आह्वान करता है।
- **द कैपिटल (1867–1894) :** पूंजीवाद का विस्तृत विश्लेषण, शोषण, मूल्य, लाभ, और वर्ग संघर्ष की अवधारणाओं पर केंद्रित है।
- **द जर्मन इडियोलॉजी (1845–1846):** अधूरा पाण्डुलिपि, दर्शन, इतिहास, और राजनीति पर मार्क्स के शुरुआती विचारों को प्रस्तुत करता है।
- **1844 की पांडुलिपियाँ (1844):** मार्क्स के एलियनेशन के सिद्धांत का विकास, जिसमें वे तर्क देते हैं कि पूंजीवाद के तहत श्रमिक अपनी मानवता से विभाजित हो जाते हैं।
- **द गोल्तन वर्क्स (1859–1860):** राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर मार्क्स के पहले लेखों का संग्रह।

लेखः–

- **द कंडीशन ऑफ द वर्किंग क्लास इन इंग्लैंड (1845):** इंग्लैंड में श्रमिक वर्ग की स्थिति पर मार्क्स का प्रभावशाली विश्लेषण।
- **द होली फैमिली (1845):** मार्क्स और एंगेल्स द्वारा धर्म, दर्शन, और राजनीति पर आलोचनात्मक निबंध।
- **द क्रिटिक ऑफ पोलिटिकल इकॉनोमी (1859):** पूंजीवाद की आलोचना पर मार्क्स का पहला प्रमुख काम।
- **थीवेस ऑफ स्टेट पॉवर (1872):** राज्य की प्रकृति और पूंजीवाद में इसकी भूमिका पर मार्क्स का निबंध।
- **द वैग्स, प्राइस एंड प्रॉफिट (1865):** मूल्य, लाभ, और श्रम के मूल्य पर मार्क्स का विश्लेषण।

पत्रः–

- मार्क्स और एंगेल्स के बीच व्यापक पत्राचार, राजनीतिक घटनाओं, दार्शनिक विचारों, और व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डालता है।

योगदानः–

- **मार्क्सवादी दर्शनः** भौतिकवादी द्वंद्वात्मकता और ऐतिहासिक भौतिकवाद के रूप में जाना जाने वाला दर्शन विकसित किया।
- **अर्थशास्त्रः** पूंजी नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होंने पूंजीवाद की आलोचना की और श्रम मूल्य सिद्धांत का प्रस्ताव रखा।
- **राजनीतिः** कम्युनिस्ट घोषणापत्र लिखा, जिसमें उन्होंने सर्वहारा वर्ग के संघर्ष और साम्यवादी समाज की स्थापना का आह्वान किया।
- **इतिहासः** इतिहास को वर्ग संघर्ष के माध्यम से समझने का एक नया ढांचा प्रदान किया।
- **सामाजिक आलोचनाः** पूंजीवाद के शोषण और असमानता की आलोचना की।

आभाव का दर्शन : मार्क्स

मार्क्स का दर्शन मुख्य रूप से भौतिकवाद और वर्ग संघर्ष पर आधारित है। उनका मानना था कि समाज का आर्थिक ढांचा उसकी सामाजिक और राजनीतिक संरचना को निर्धारित करता है। वे मानते थे कि इतिहास वर्ग संघर्षों का इतिहास है, और यह संघर्ष अंततः समाजवादी क्रांति की ओर ले जाएगा।

कार्ल मार्क्स और जोसेफ प्रुधो 19वीं सदी के दो प्रमुख सामाजिक चिंतक थे, जिन्होंने पूंजीवाद और उसके विकल्पों पर विचार किया। हालांकि दोनों शोषण, असमानता और सामाजिक अन्याय के विरोध में थे, लेकिन उन्होंने इन समस्याओं को दूर करने के विभिन्न तरीकों की वकालत की। इसके परिणामस्वरूप, मार्क्स ने प्रुधो के विचारों की कई आलोचना की।

जोसेफ प्रुधो (Pierre & Joseph Proudhon) एक फ्रांसीसी अराजकतावादी और समाजवादी विचारक थे। वे "संपत्ति चोरी है" (Property is theft) के लिए जाने जाते हैं और "अराजकता" (anarchy) की अवधारणा के प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं। प्रुधो और कार्ल मार्क्स के बीच विचारों का गहरा मतभेद था, और मार्क्स ने प्रुधो की आलोचना कई तरीकों से की।[5]

मार्क्स ने अपनी पुस्तक "मिजरी ऑफ फिलॉसफी" (The Poverty of Philosophy) में प्रुधो की पुस्तक "फलॉसफी ऑफ मिजरी"(The Philosophy of Poverty) की विस्तृत आलोचना की। इस पुस्तक में, मार्क्स ने प्रुधो के विचारों को तर्कसंगत और वैज्ञानिक आधार पर खारिज किया और समाजवादी सिद्धांतों का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

"द मिजरी ऑफ फिलॉसफी" (La Misère de la Philosophie in French) कार्ल मार्क्स द्वारा 1847 में प्रकाशित एक दार्शनिक ग्रंथ है। यह ग्रंथ प्रुधो के पुस्तक "What Is Property" की आलोचना के रूप में लिखा गया था। मार्क्स ने प्रुधो के विचारों को अमूर्त, अवास्तविक और सामाजिक परिवर्तन लाने में असफल माना। उन्होंने तर्क दिया कि प्रुधो की व्यक्तिवाद और छोटी संपत्ति पर जोर देने की विचारधारा पूंजीवाद को बनाए रखने में मदद करेगी, बजाय इसे गिराने के। मार्क्स ने इसके बजाय वर्ग संघर्ष और क्रांति के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने की वकालत की।[6]

मार्क्स की प्रुधो की आलोचना के कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:[7]–

1. व्यक्तिवाद बनाम सामूहिकता: मार्क्स ने प्रुधो के व्यक्तिवाद पर आलोचना की, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वामित्व पर जोर दिया गया था। मार्क्स का मानना था कि पूंजीवाद में, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का वास्तव में शोषक पूंजीपतियों द्वारा दुरुपयोग किया जाता था, और यह सभी व्यक्तियों के हित में नहीं था। उन्होंने तर्क दिया कि सामाजिक समस्याओं को समाधान करने के लिए सामूहिक कार्रवाई और सामाजिक स्वामित्व आवश्यक था।

2. छोटी संपत्ति बनाम क्रांति: मार्क्स ने प्रुधो के विचार को भी नकारात्मक रूप से देखा कि छोटी संपत्ति पूंजीवाद के बुरे प्रभावों को दूर कर सकती है। मार्क्स का मानना था कि पूंजीवाद एक व्यवस्थित प्रणाली थी जिसे केवल क्रांति के माध्यम से ही गिराया जा सकता था। उन्होंने तर्क दिया कि छोटी संपत्ति पूंजीपतियों की शक्ति को मजबूत करेगी और श्रमिकों को विभाजित करेगी।

3. मजदूरी का सिद्धांत: मार्क्स ने प्रुधो के मजदूरी के सिद्धांत की भी आलोचना की, जिसमें तर्क दिया गया था कि मजदूरी को श्रमिकों द्वारा उत्पादित मूल्य के बराबर होना चाहिए। मार्क्स का मानना था कि यह सिद्धांत पूंजीवाद की मूलभूत विरोधाभासों को नहीं समझ पाता था, जिसमें पूंजीपति अधिशेष मूल्य का शोषण करते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि मजदूरी श्रम की कीमत नहीं थी, बल्कि श्रमिकों की जीविका के लिए न्यूनतम लागत थी।

4. दार्शनिक आधार: मार्क्स ने प्रुधो की आलोचना उनकी विचारधारात्मक अस्पष्टता और अस्पष्ट दार्शनिक आधार के कारण की। मार्क्स का मानना था कि प्रुधो की विचारधारा आदर्शवादी और यथार्थ से कटी हुई है, जबकि मार्क्स स्वयं भौतिकवादी दृष्टिकोण को अपनाते थे।

5. आर्थिक विश्लेषण : मार्क्स ने प्रुधो की आर्थिक विचारधारा को अपर्याप्त और भ्रांतिपूर्ण माना। प्रुधो ने "उपयोग मूल्य" और "वनिमय मूल्य" के बीच अंतर को स्पष्ट रूप से नहीं समझा, जबकि मार्क्स ने अपनी पुस्तक "दास कैपिटल" में इन अवधारणाओं का गहन विश्लेषण किया।

6. **वर्ग संघर्ष:** मार्क्स के अनुसार, प्रुधो ने वर्ग संघर्ष की अवधारणा को समझने में विफलता दिखाई। प्रुधो ने समाज को सामंजस्यपूर्ण और संतुलित दृष्टिकोण से देखा, जबकि मार्क्स का मानना था कि समाज वर्ग संघर्ष पर आधारित है, और यही संघर्ष समाज में बदलाव लाने का प्रमुख साधन है।

7. सामाजिक परिवर्तन के साधन: मार्क्स ने प्रुधो की अराजकतावादी दृष्टिकोण की आलोचना की, जिसमें प्रुधो ने सरकार और राज्य के बिना समाज की परिकल्पना की। मार्क्स के अनुसार, राज्य और सरकार का उन्मूलन समाजवादी क्रांति के बाद ही संभव है, न कि उससे पहले।

8. प्रकृति और संपत्ति: प्रुधो की संपत्ति की अवधारणा को मार्क्स ने आदर्शवादी और व्यवहारिक रूप से असंवेदनशील माना। प्रुधो ने संपत्ति को स्वायत्त और मुक्त सहयोग के आधार पर पुनः संगठित करने की वकालत की, जबकि मार्क्स का मानना था कि संपत्ति का सामूहिकीकरण और उत्पादन के साधनों का सामूहिक स्वामित्व ही सही समाधान है।

20वीं और 21वीं सदी में मार्क्सवाद का प्रभाव: क्रांतियां, शासन और विचारधारा

मार्क्सवादी दर्शन, जिसे भौतिकवादी द्वंद्वात्मकता और ऐतिहासिक भौतिकवाद के रूप में भी जाना जाता है, सामाजिक परिवर्तन और विकास को समझने का एक दर्शन है। यह दर्शन कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा विकसित किया गया था। 21वीं शताब्दी में मार्क्सवादी दर्शन विकसित हो रहा है और नए रूपों में प्रकट हो रहा है। यह विश्वास और प्रभाव का एक स्रोत बना हुआ है, लेकिन यह चुनौतियों का भी सामना कर रहा है। यह कहना मुश्किल है कि भविष्य में मार्क्सवादी दर्शन का क्या होगा, लेकिन यह निश्चित रूप से विश्व पर गहरा प्रभाव डालता रहेगा। मार्क्सवाद ने 20वीं शताब्दी में राजनीतिक विचारधाराओं को गहराई से प्रभावित किया, जिसमें सामाजिक लोकतंत्र, साम्यवाद और उदारवाद शामिल हैं। उनके विचारों ने सामाजिक क्रांति और राजनीतिक आंदोलनों को प्रेरित किया है।[8]

मार्क्सवाद आज भी विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

लैटिन अमेरिका में वामपंथी सरकारें 21वीं सदी की शुरुआत में, वेनेजुएला, बोलीविया, इक्वाडोर और निकारागुआ जैसे लैटिन अमेरिकी देशों में मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित वामपंथी सरकारें सत्ता में आईं। इन सरकारों ने सामाजिक कार्यक्रमों में वृद्धि, गरीबी को कम करने और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि, इनमें से कुछ सरकारों को अर्थव्यवस्था में गिरावट, भ्रष्टाचार और अधिकारवादी प्रवृत्तियों का सामना करना पड़ा है।[9]

शीत युद्ध (1947–1991) के दौरान, अल्पविकास देश अक्सर सुपरपावरों – संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ – के बीच वैचारिक और भू–राजनीतिक संघर्ष में फंस गए थे। यह हस्तक्षेप गृहयुद्ध, राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक अशांति और मानवीय संकटों का एक दौर लेकर आया।[10]

वैचारिक प्रतिद्वंद्विता दोनों महाशक्तियां अपनी विचारधाराओं (पूंजीवाद बनाम साम्यवाद) को बढ़ावा देने और वैश्विक प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करने के लिए प्रतिस्पर्धी थीं। रणनीतिक हित अल्पविकास देशों में अक्सर महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन और रणनीतिक स्थान होते थे, जो सुपरपावरों के लिए आकर्षक थे। प्रॉक्सी युद्ध सीधे सैन्य टकराव से बचने के लिए, सुपरपावर अक्सर स्थानीय गुटों का समर्थन करते थे, जिससे गृहयुद्ध और संघर्ष छिड़ गए।

फ्रेडरिक एंगेल्स मार्क्स के सहयोगी, कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो के सह–लेखक, और मार्क्सवाद के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। व्लादिमीर लेनिन रूसी क्रांति के नेता, जिन्होंने रूस में मार्क्सवादी विचारधारा को लागू किया और सोवियत संघ की स्थापना की। जॉर्ज लुकाच हंगेरियन दार्शनिक, जिन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा में सांस्कृतिक आलोचना और मूल्य सिद्धांत को विकसित किया। अंतोनियो ग्राम्स्की इतालवी दार्शनिक, जिन्होंने सांस्कृतिक और वैचारिक आधिपत्य की अवधारणा को विकसित किया। थियोडोर एडोर्नो जर्मन दार्शनिक और सामाजिक आलोचक, जिन्होंने उद्योगीकरण और पूंजीवाद के नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया। हेर्बर्ट मार्कुसे जर्मन–अमेरिकी दार्शनिक और सामाजिक आलोचक, जिन्होंने उद्योगीकरण और पूंजीवाद के नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण किया। जीन–पॉल सार्त्र फ्रांसीसी दार्शनिक और नाटककार, जिन्होंने अस्तित्ववाद और मार्क्सवाद को जोड़ा।[11]

उत्तर–मार्क्सवादी विचारधाराएं:[12] –

- **नव–मार्क्सवादः** 20वीं शताब्दी के मध्य में विकसित, मार्क्सवादी विचारधारा का एक संशोधन जो आधुनिक समाज और राजनीति की जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास करता है।
- **पोस्ट–मार्क्सवादः** 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित, मार्क्सवादी विचारधारा का एक आलोचनात्मक मूल्यांकन जो मार्क्स की भविष्यवाणियों और विश्लेषणों की सीमाओं की पहचान करता है।
- **अराजकतावादः** राज्य और पूंजीवाद के विरोध पर केंद्रित राजनीतिक दर्शन, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वैच्छिक सहयोग पर आधारित समाज की वकालत करता है।
- **स्त्रीवादः** लिंग और लैंगिकता पर केंद्रित सामाजिक आंदोलन, जो पितृसत्ता और लिंग असमानता को चुनौती देता है।
- **उत्तर–औपनिवेशिकताः** औपनिवेशिकवाद और साम्राज्यवाद के नकारात्मक प्रभावों पर केंद्रित बौद्धिक आंदोलन, जो गैर–पश्चिमी संस्कृतियों और दृष्टिकोणों को बढ़ावा देता है।

दुनिया में मार्क्सवाद दर्शन का राजनीतिक प्रभाव[13] :

- **चीनः** चीन में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) राजनीतिक विचारधारा के रूप में मार्क्सवाद–लेनिनवाद का पालन करती है। चीन मार्क्सवादी–लेनिनवादी शासन के अधीन एक प्रमुख वैश्विक शक्ति बन गया है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) राजनीतिक और आर्थिक मामलों में प्रमुख भूमिका निभाती है।
- **क्यूबा :** क्यूबा 1959 की क्रांति के बाद से मार्क्सवादी–लेनिनवादी शासन के अधीन रहा है। यह अमेरिका के प्रतिरोध का प्रतीक बना हुआ है। क्यूबा में, क्यूबाई क्रांति के बाद से मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारधारा प्रभावी रही है।
- **वियतनामः** वियतनाम 1945 में फ्रांस से स्वतंत्रता के बाद से मार्क्सवादी–लेनिनवादी शासन के अधीन रहा है। यह दक्षिण–पूर्व एशिया में एक क्षेत्रीय शक्ति बन गया है। वियतनाम में, वियतनामी कम्युनिस्ट पार्टी (VCP) राजनीतिक विचारधारा के रूप में मार्क्सवाद–लेनिनवाद का पालन करती है। उत्तर वियतनाम (सोवियत और चीनी समर्थित) और दक्षिण वियतनाम (अमेरिकी समर्थित) के बीच युद्ध, जिसमें लाखों लोग मारे गए और वियतनाम का एकीकरण हुआ।
- **अन्य देशः** लैटिन अमेरिका, वेनेजुएला, बोलीविया और इक्वाडोर जैसे लैटिन अमेरिकी देशों में मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित वामपंथी सरकारें हैं। नेपाल, लाओस और जैसे कुछ अन्य देशों में भी मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव है।
- **रूसी क्रांतिः** 1917 में रूसी क्रांति ने दुनिया की पहली समाजवादी सरकार की स्थापना की। यह मार्क्सवादी विचारों की शक्ति का एक शक्तिशाली उदाहरण था और पूरे विश्व में क्रांतिकारी आंदोलनों को प्रेरित किया।
- **कोरियाई युद्ध (1950–1953)**: उत्तर कोरिया (सोवियत समर्थित) और दक्षिण कोरिया (अमेरिकी समर्थित) के बीच युद्ध, जिसमें लाखों लोग मारे गए और कोरियाई प्रायद्वीप का विभाजन हुआ।
- **अफगानिस्तान में सोवियत युद्ध (1979–1989):** सोवियत संघ ने अफगान सरकार का समर्थन किया, जिसका मुकाबला मुजाहिदीन (अमेरिकी और पाकिस्तानी समर्थित) ने किया, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोगों की मौत हुई और सोवियत संघ की वापसी हुई।
- **अंगोला का गृहयुद्ध (1975–2002):** एमपीएलए (सोवियत समर्थित) और यूएनआईटीए (अमेरिकी समर्थित) के बीच युद्ध, जिसके परिणामस्वरूप लाखों लोगों की मौत हुई और राजनीतिक अस्थिरता पैदा हुई।
- **सामाजिक आंदोलनः** दुनिया भर में सामाजिक आंदोलन, मजदूर अधिकारों, महिला अधिकारों, पर्यावरणवाद और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करते हुए मार्क्सवादी विचारों से प्रेरणा लेते हैं। शीत युद्ध के दौरान, मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारधारा ने सोवियत संघ और उसके सहयोगी देशों में राजनीतिक व्यवस्थाओं को आकार दिया।

विकसित देशों में, मार्क्सवादी विचारों ने सामाजिक न्याय, समानता और श्रमिक अधिकारों के लिए आंदोलनों को प्रेरित करना जारी रखा है।

आर्थिक प्रभाव :

वैश्विक वित्तीय संकट 2008 का वैश्विक वित्तीय संकट ने पूंजीवाद की विफलताओं पर बहस को जन्म दिया है। चीन, वियतनाम और क्यूबा जैसे देशों ने मिश्र अर्थव्यवस्थाओं को विकसित किया है, जो बाजार तंत्र और राज्य नियंत्रण का मिश्रण हैं। मार्क्सवादी विचारधारा आर्थिक असमानता के खिलाफ संघर्ष पर जोर देती है। असमानता के मुद्दे पर बहस दुनिया भर में जारी है। मार्क्सवादी श्रमिकों के शोषण की आलोचना करते हैं और बेहतर काम करने की स्थिति और वेतन की मांग करते हैं। मार्क्सवादी वैश्वीकरण की आलोचना करते हैं, जिसके बारे में वे मानते हैं कि यह विकसित देशों को अविकसित देशों का शोषण करने की अनुमति देता है।[14]

चीन के तेजी से बढ़ते अर्थव्यवस्था ने विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था में शक्ति संतुलन को बदल दिया है। चीन की मार्क्सवादी सरकार अंतरराष्ट्रीय मामलों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रही है।

मार्क्सवादी सरकारों ने अक्सर भूमि सुधार, राष्ट्रीयकरण और केंद्रीय नियोजन नीतियां लागू कीं। इन नीतियों का लक्ष्य गरीबी को कम करना, असमानता को कम करना और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना था। हालांकि, इन नीतियों को अक्सर अक्षमता, भ्रष्टाचार और आर्थिक ठहराव से ग्रस्त माना जाता है।

सामाजिक प्रभावः

मार्क्सवादी विचारों ने अल्पविकास देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा तक पहुंच में सुधार लाने में योगदान दिया। इसने लिंग, जाति और वर्ग के आधार पर भेदभाव के खिलाफ आंदोलनों को प्रेरित किया। मार्क्सवादी साहित्य, कला और संस्कृति ने सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय के लिए आवाज उठाई।

मार्क्सवाद का सांस्कृतिक प्रभाव जटिल और बहुआयामी रहा है। इसने सामाजिक न्याय, समानता और मानव मुक्ति के लिए संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, इसकी आलोचना भी की गई है, खासकर सत्तावादी शासनों द्वारा मार्क्सवादी विचारधारा के दुरुपयोग के लिए। उदाहरण के लिए, चार्ल्स डिकेंस का उपन्यास "ओलिवर ट्विस्ट" औद्योगिक क्रांति के दौरान गरीबी और सामाजिक अन्याय का एक शक्तिशाली चित्रण है।[15]

साहित्य और कला में मार्क्सवादी दर्शन का प्रभाव[16] :

- **उपन्यासः** चार्ल्स डिकेंस (:ओलिवर ट्विस्ट"), एमिल ज़ोला ("गेरमिनल"), जॉर्ज ऑरवेल ("1989" और "एनिमल फार्म"), खालिद हुसैनी ("द काइट रनर")
- **कविता :** बर्टोल्ड ब्रेख्त, पाउलो फ्रेरे, नज़्म हिकमत
- **प्रचार कलाः** सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशों में कला
- **नाटकः** मैक्सिम गोर्की ("द लोअर डेप्थ्स"), बर्टोल्ड ब्रेख्त ("द थ्रीपेनी ओपेरा"), आर्थर मिलर ("द डेथ ऑफ ए सेल्समैन")
- **श्रमिक गीतः** "The International", "Solidarity Forever"
  लोक संगीतः वुडी गुथरी, पीट सीगर
  प्रगतिशील रॉकः पिंक फ्लॉयड, रेडियोहेड
- **थिएटरः**
  एपिक थिएटरः बर्टोल्ड ब्रेख्त, जॉर्ज कैसर
  राजनीतिक थिएटरः ऑगस्टो बोअल, एरियल डोर्फमैन
  सामुदायिक थिएटरः पाउलो फ्रेरे, एंटोनियो ग्राम्स्की
  यथार्थवादः गुस्ताव कोर्टे ("द स्टोनब्रेकर्स"),
  जीन–फ्रांस्वा eillet ("द ग्लीनर्स"), एडवर्ड हॉपर ("Nighthawk")
- **सामाजिक टिप्पणीः** कैटलिना बेरेन्गुएरो ("El pany los sueno"), बैनकसी ("Girl with Balloon"), ग्राफिटी आर्ट

मार्क्सवादी विचारधारा ने दुनिया भर में सामाजिक आंदोलनों को प्रेरित किया है, जैसे कि श्रमिक आंदोलन, महिला आंदोलन, और अनुपनिवेशवादी आंदोलन। मार्क्सवादी विचारधारा ने सामाजिक कल्याणकारी कार्यक्रमों और आर्थिक समानता पर ध्यान केंद्रित करने वाली आर्थिक नीतियों को प्रभावित किया है। मार्क्सवादी विचारधारा ने सांस्कृतिक आलोचना और विचारधारा की अवधारणा को जन्म दिया है। मार्क्सवादी विचारधारा शैक्षणिक क्षेत्र में भी प्रभावशाली रही है, आलोचनात्मक सिद्धांत और सामाजिक न्याय के अध्ययन को प्रेरित करती है।

कार्ल मार्क्स दर्शन की मान्यताएं[17] :–

1. **अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांतः** मार्क्स का तर्क था कि पूंजीपति श्रमिकों द्वारा उत्पादित अतिरिक्त मूल्य (मजदूरी से अधिक मूल्य) हड़प लेते हैं। यह शोषण पूंजी संचय और पूंजीपतियों के धन में वृद्धि का आधार बनता है।

2. **सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकताः** मार्क्स के अनुसार, इन समस्याओं का समाधान समाजवादी क्रांति के माध्यम से किया जा सकता है, जहां उत्पादन के साधनों का सामूहिक स्वामित्व होगा और संसाधनों का समान वितरण होगा।

3. **संसाधनों की कमी और असमानताः** पूंजीवाद में उत्पादन की ताकतें और उत्पादन संबंधों के बीच असंतुलन होता है, जिससे संसाधनों की कमी और सामाजिक असमानता उत्पन्न होती है।

4. **पूंजीवादी उत्पादन पद्धतिः** इसमें उत्पादन के साधनों (जैसे, फैक्टरी, जमीन) का स्वामित्व पूंजीपतियों के हाथ में होता है, जबकि मजदूर वर्ग उनके लिए काम करता है। इससे संसाधनों और धन का असमान वितरण होता है।

निष्कर्षः–

मार्क्स ने साम्यवाद को एक ऐसे आदर्श समाज के रूप में देखा, जिसमें वर्ग–विभाजन, राज्य और निजी संपत्ति पर आधारित असमानता का अंत हो तथा उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व स्थापित हो। उनके अनुसार समानता और सामूहिक स्वामित्व पर आधारित व्यवस्था ही पूंजीवाद, शोषण और अभाव से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। यद्यपि भारत में वर्तमान में चल रहे सभी आंदोलनों को सीधे तौर पर कार्ल मार्क्स की विचारधारा से प्रेरित कहना उचित नहीं होगा, फिर भी आर्थिक असमानता, श्रम–अधिकार, संसाधनों के असमान वितरण, शोषण, बेरोजगारी, भूमि एवं आजीविका तथा सामाजिक–आर्थिक न्याय से जुड़े अनेक आंदोलनों में मार्क्सवादी चिंतन की वैचारिक प्रतिध्वनि दिखाई देती है। वंचित एवं श्रमिक वर्ग के हितों की मांग, सत्ता और संसाधनों के असमान केंद्रीकरण का विरोध तथा अधिक समानतापूर्ण सामाजिक व्यवस्था की आकांक्षा मार्क्स के वर्ग–संघर्ष, शोषण और असमानता संबंधी विचारों से साम्य रखती है। आज भी पूंजीवाद विश्व की प्रमुख आर्थिक व्यवस्था है और उसके साथ जुड़ी असमानता, शोषण एवं अभाव की समस्याएं अनेक समाजों में विद्यमान हैं। इस दृष्टि से मार्क्स के विचार समकालीन पूंजीवादी व्यवस्था की अंतर्विरोधों को समझने तथा अधिक न्यायपूर्ण और समानतापूर्ण समाज की दिशा में होने वाले संघर्षों के विश्लेषण के लिए आज भी महत्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करते हैं। इस प्रकार मार्क्स का चिंतन 20वीं ही नहीं, बल्कि 21वीं सदी के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विमर्श को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण विचारधाराओं में बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. Marx, Karl. (1848). The Communist Manifesto. New York: Penguin Classics.
2. Frank, Andre Gunder. (1966). Dependency and Underdevelopment: Latin America's Experience. New York: Monthly Review Press.
3. McLellan,David. 1995 : Karl Marx: A Biography Palgrave . Macmillan Publisher: Pages: 464
4. Callinicos,. Alex. 1983. *The Revolutionary Ideas of Karl Marx*. Bookmarks Publications,
5. Marx,Karl. 1990 (Original 1867) ."Capital: Critique of Political Economy, Volume I" by Publisher: Penguin Classics. Pages: 1152
6. Marx, Karl. (1867). Capital: A Critique of Political Economy. Volume I. New York: International Publishers
7. Marx,Karl. 2007 (Original 1932)"Economic and Philosophic Manuscripts of 1844".Publisher: Dover Publications.Pages: 160
8. Lenin, Vladimir I. (1916). Imperialism: The Highest Stage of Capitalism. Moscow: Progress Publishers.
9. Hobsbawm, Eric. *How to Change the World: Tales of Marx and Marxism*. Little, Brown, 2011.
10. Arrighi, Giovanni. (1994). Long Waves of Capitalist Development. London: Verso.
11. Jameson, Fredric**.** (1981). The Political Unconscious: Narrative as a Socially Symbolic Act. Minneapolis: University of Minnesota Press
12. Said, Edward W. (1994). Culture and Imperialism. London: Verso.
13. Mehta, Pratap. (2005). The End of Ideology: Decline of Socialism in the 20th Century. New Delhi: Oxford University Press.
14. Sen, Sankar. (1971). Colonialism, Capitalism and Comprador Classes: A Study of Indian Capitalism in Its Context. Calcutta: K.P. Bagchi & Co.
15. Avineri, Shlomo. (1968). The Social and Political Thought of Karl Marx. Cambridge: Cambridge University Press.
16. The Marxists: https://www.marxists.org/ (07/07/2024)
17. Stanford Encyclopedia of Philosophy **:** https://plato.stanford.edu/ENTRIES/marx/ (10/07/2024)